अमर उजाला 19/05/2026

सीएसए की आरएसी कमेटी में पांच प्रोजेक्ट आए

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि की रिसर्च एडवाइजरी कमेटी (आरएसी) की बैठक में सोमवार को पांच प्रोजेक्ट रखे गए। इन विषयों पर शोध कार्य शुरू किए जाएंगे। प्रोजेक्ट के विषय एकीकृत कृषि प्रणाली, मौसम, अरहर, शाकभाजी और जल प्रबंधन रहे। सस्य विज्ञान विभाग में हुई बैठक की अध्यक्षता निदेशक शोध डॉ. महक सिंह ने की।

सस्य विज्ञान विभाग में हुई कमेटी की बैठक, एकीकृत कृषि प्रणाली और मौसम पर चर्चा

बैठक में प्रोजेक्ट के विषयों पर चर्चा की गई। एकीकृत कृषि प्रणाली के संबंध में बताया कि खेती-किसानी के साथ किसानों को डेयरी शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। इससे उनकी आमदनी बढ़ेगी।

वहीं, मौसम संबंधी प्रोजेक्ट में ग्लोबल वार्मिंग के कारण होने वाले बदलाव की चुनौतियों पर मंथन हुआ। बैठक में विभागाध्यक्ष प्रोफेसर एमजेड सिद्दीकी, डॉ. राजीव, डॉ. नौशाद खान, डॉ. संजीव कुमार, डॉ. अखिलेश आदि रहे। (ब्यूरो)

अमर भारती
एक उम्मीद
स्करण
ः 03 रु. RNI No. UPHIN/2011/46455 www.amarbharti.com मंगलवार, 19 मई 2026 शक सम्वत् 1948, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष द्वितीया, विक्रम सम्वत् 2083

कवि कोना
-सुनहरी लाल 'तुरन्त'

सोचना और बोलना

समय उपयुक्त हो तब देखकर अपना हृदय खोलो।
हृदय की बात हिरदय की तराजू पर प्रथम तोलो।
तुम्हारी जिन्दगी की हर खुशी छिन जायगी प्यारे।
जरूरत से बहुत ज्यादा नहीं सोचो नहीं बोलो।

मृदा परीक्षण के आधार पर ही करें उर्वरकों का उपयोग- कृषि वैज्ञानिक

कानपुर (अमर भारती)। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर की ओर से ग्राम रामगढ़ विकासखंड मैथा में मृदा परीक्षण हेतु जागरूकता अभियान चलाया गया । इसके तहत ऑन-कैंपस एवं ऑफ-कैंपस प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों को वैज्ञानिक खेती के लिए प्रेरित किया जा रहा है । कृषि वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि उर्वरकों का असंतुलित प्रयोग मिट्टी की उर्वरता को प्रभावित करता है और लंबे समय में उत्पादन घटा सकता है । इसलिए किसानों को मृदा परीक्षण के आधार पर ही उर्वरकों का उपयोग करना चाहिए । प्रशिक्षण के दौरान किसानों को नाइट्रोजन, फॉस्फोरस एवं पोटाश (एनपीके) के संतुलित उपयोग के साथ-साथ गोबर खाद, वर्मी कम्पोस्ट, हरी खाद एवं जैव उर्वरकों के प्रयोग की जानकारी दी जा रही है।जिससे रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम हो और कृषि में स्थिरता लाई जा सके । केवीके के वैज्ञानिक गांव-गांव जाकर किसानों को नई तकनीकों से अवगत करा रहे हैं।जिससे वे कम लागत में बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकें ।

WORLD
खबरें एक्सप्रेस

तिलक वर्मा को डेट करने की खबर अफवाह श्रीलीला ने तोड़ी चुप्पी

मृदा परीक्षण के आधार पर उर्वरक इस्तेमाल करें किसान, वैज्ञानिकों ने किया जागरूक

वर्ल्ड खबर एक्सप्रेस

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, दिलीप नगर की ओर से विकासखंड मैथा के ग्राम रामगढ़ में मृदा परीक्षण को लेकर जागरूकता अभियान चलाया गया। अभियान के तहत ऑन-कैंपस और ऑफ-कैंपस प्रशिक्षण कार्यक्रमों के जरिए किसानों को वैज्ञानिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि उर्वरकों का असंतुलित प्रयोग मिट्टी की उर्वरता को नुकसान पहुंचाता है और लंबे समय में उत्पादन घटा सकता है। उन्होंने किसानों से मृदा परीक्षण के आधार पर ही उर्वरकों का उपयोग करने की अपील की।

संतुलित पोषण और जैविक विकल्पों पर जोर: प्रशिक्षण के दौरान किसानों को नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश (एनपीके) के संतुलित उपयोग की जानकारी दी गई। साथ ही गोबर खाद, वर्मी कम्पोस्ट, हरी खाद और जैव उर्वरकों के इस्तेमाल पर विशेष जोर दिया गया, ताकि रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम हो और खेती में स्थिरता लाई जा सके।

कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक गांव-गांव जाकर किसानों को नई तकनीकों से अवगत करा रहे हैं, जिससे कम लागत में बेहतर उत्पादन हासिल किया जा सके। वैज्ञानिकों ने कहा कि इस पहल से किसानों की आय बढ़ेगी और टिकाऊ कृषि प्रणाली को मजबूती मिलेगी।

कार्यक्रम में उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अरुण कुमार सिंह और पशुपालन वैज्ञानिक डॉ. शशिकांत ने भी किसानों को वैज्ञानिक जानकारी दी। इस दौरान 50 से अधिक किसान मौजूद रहे।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 17 अंक : 313 कानपुर, मंगलवार 19 मई 2026 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

मृदा परीक्षण के आधार पर ही करें उर्वरकों का उपयोग– कृषि वैज्ञानिक

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर की ओर से ग्राम रामगढ़ विकासखंड मैथा में मृदा परीक्षण हेतु जागरूकता अभियान चलाया गया । इसके तहत ऑन–कैंपस एवं ऑफ–कैंपस प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों को वैज्ञानिक खेती के लिए प्रेरित किया जा रहा है । कृषि वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि उर्वरकों का असंतुलित प्रयोग मिट्टी की उर्वरता

को प्रभावित करता है और लंबे समय में उत्पादन घटा सकता है । इसलिए किसानों को मृदा परीक्षण के आधार पर ही उर्वरकों का उपयोग करना चाहिए । प्रशिक्षण के दौरान किसानों को नाइट्रोजन, फॉस्फोरस एवं पोटाश (एनपीके) के संतुलित उपयोग के साथ–साथ गोबर खाद, वर्मी कम्पोस्ट, हरी खाद एवं जैव उर्वरकों के प्रयोग की जानकारी दी जा रही है ।जिससे रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम हो और कृषि में स्थिरता लाई जा सके । केवीके के वैज्ञानिक गांव–गांव जाकर किसानों को नई तकनीकों से अवगत करा रहे हैं ।जिससे वे कम लागत में बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकें । डॉ. खलील खान ने कहा कि इस पहल से भविष्य में किसानों की आय में वृद्धि होगी और टिकाऊ कृषि प्रणाली को मजबूती मिलेगी। केवीके का यह अभियान जिले के किसानों के लिए लाभकारी साबित हो रहा है और उन्हें वैज्ञानिक खेती की ओर अग्रसर कर रहा है। इस अवसर पर उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह एवं पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने किसानों को वैज्ञानिक जानकारी दी।